SRI DEV SUMAN UNIVERSITY BADSHAITHAUL {TEHRI GARHWAL}

SESSION-2023{ONWARD]

**Vocational {Skill Development} Course in Traditional knowledge system**

## HINDI DIPARTMENT

**Syllabus Preparation Committee**

**Dr. Muktinath Yadav** *Professor & H.O.D*

**Dr. Kalpana Pant** *Professor*

**Dr. Adheer Kumar** *Professor*

## Members of Board of Studies - HINDI

| S.N. | Name | Nominated as | Designation | Affiliation | Sign. |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | PROF. MUKTINATH YADAV | Member | PROFESSOR & HEAD OF DEPARTMENT | SHRIDEV SUMAN UTTARAKHAND UNIVERSITY,RISHIKESH CAMPUS | 11.07.2023 |
| 2 | PROF. KALPANA PANT | Member | PROFESSOR | SHRIDEV SUMAN UTTARAKHAND UNIVERSITY,RISHIKESH CAMPUS | |
| 3 | PROF. ADHEER KUMAR | Member | PROFESSOR | SHRIDEV SUMAN UTTARAKHAND UNIVERSITY,RISHIKESH CAMPUS | |
| 4 | PROF. SUCHITRA MALIK | Member | PROFESSOR & COORDINATOR | GURUKULKUL KANGARI UNIVERSITY, KANYA GURUKUL CAMPUS, HARIDWAR | |
| 5 | PROF. JANKI PANWAR | Govt.P.G. College Kotdwar | Principal | Govt.P.G. College Kotdwar | |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 6 | PROF. LOVELY RAJVANSHI | Govt.P.G. College Jaiharikhal | Principal | Govt.P.G. College Jaiharikhal | |
| 7 | PROF. K.L. TALWAR | Govt. D.C. College Chakrata | Principal | Govt. D.C. College Chakrata | |
| 8 | NIDESHAK | Anusandhan Sansthan | Nideshak | Uttarakhand Bhasha Sansthan Rajpur Road Dehradun | |

PROF. D.C. GOSWAMI :
CHAIRMAN OF BOS
DEAN ARTS;
SHRIDEV SUMAN UTTARAKHAND
UNIVERSITY,RISHIKESH CAMPUS

## भारतीय ज्ञान परम्परा–ंसाहित्य

| क0 सं0 | विषय | केडिट. | सेमेस्टर |
|---|---|---|---|
| 1- | भारतीय ज्ञान प्रणाली में साहित्य और दर्शन | 03 | I |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 2- | भारतीय ज्ञान परंपरा और वैज्ञानिक चिंतन | 03 | II |
| 3- | पारंपरिक प्रथाएं और व्यावहारिक पारंपरिक ज्ञान | 03 | III |
| 4- | भारतीय ज्ञान परम्परा का संरक्षण,परिरक्षण एवं प्रबंधन | 03 | IV |

## प्रथम सेमेस्टर– भारतीय ज्ञान प्रणाली में साहित्य और दर्शन

### उद्देश्य–

भारतीय ज्ञान प्रणाली की अवधारणा एवं स्वरूप पर व्याख्यानों की श्रृंखला के माध्यम से शिक्षार्थियों में इस विषय पर चेतना का विकास करना

### परिणाम–

शिक्षार्थी भारतीय ज्ञान प्रणाली की अवधारणा एवं स्वरूप एवं विकास की प्रक्रिया से परिचित होता है अतीत के अध्ययन के द्वारा समृद्घ ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक विरासत का बोध प्राप्त करता है।

| व्यावसायिक पाठ्यकम –1 | पाठ्यकम का नाम– | |
|---|---|---|
| | | |
| पाठ्यकम कोड | | |
| केडिट–03 | | |
| कुल अंक–25+75=100 | | |
| व्याख्यान, ट्यूटोरियल एवं प्रयोगों की कुल संख्या =3::0:0 | | व्याख्यानों की संख्या |
| इकाई–01 | भारतीय ज्ञान परम्परा अवधारणा एवं स्वरूप | 10 |
| इकाई–02 | वैदिक साहित्य, संस्कृत साहित्य– परिचय एवं विकास | 15 |
| इकाई–03 | पालि, प्राकृत एवं अपभ्रंश साहित्य विकासात्मक परिचय | 10 |
| इकाई–04 | दर्शन की भारतीय परम्परा | 10 |

संदर्भ ग्रंथ–1– वैदिक ज्ञान विज्ञान कोश आधुनिक परिप्रेक्ष्य में – संपादक डा0 मनोदत्त पाठक
2– वेदिक वांग्मय एक परिशीलन–ब्रजबिहारी चौबे
3– वैदिक साहित्य का इतिहास– डा0 कर्णसिंह– साहित्य भंडार, मेरठ
4– वैदिक साहित्य का इतिहास– डा0 पारसनाथ द्विवेदी–चौखम्बा, सुरभारती, वाराणसी
5– वेदिक साहित्य का इतिहास–डा0 सुरेन्द्र देव शास्त्री– साहित्य भंडार, मेरड
6. पालि साहित्य का इतिहास– भरतसिंह उपध्याय– हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग
7– प्राकृत साहित्य का इतिहास– डा0 जगदीशचंद्र जैन, चौखम्बा, विद्याभवन
8– अपभ्रंश साहित्य का इतिहास–प्रो0 सुमन जैन– जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय राजस्थान
9–वेदांत–जीवन का एक जीवंत दर्शन–सी राजबोपालाचार
10– भारतीय दर्शन परम्परा–कं दामोदरन
11.भारतीय दर्शन–सर्वपल्ली राधाकृष्णन
सोर्सज आफ इंडियन ट्रडिशन–के दामोदरन

## द्वितीय सेमेस्टर– भारतीय ज्ञान परंपरा और वैज्ञानिक चिंतन

खगोल विज्ञान के साथ गणित का अनिवार्य संबंध माना गया है। भारतीयों का खगोल विज्ञान, ज्योतिष की विशेष उपलब्धि गणित की जटिल संगणनाओं एवं ब्रहमांड के व्यापक तथा सूक्ष्म निरीक्षण और प्रयोग का ही प्रतिफल है फलत शिक्षार्थियों में तर्कशक्ति विश्लेषण एवं संश्लेषण क्षमता का विकास। खगोल विज्ञान के महत्व और सम्पूर्ण ब्रह्मांड के विषय में जागरूक बनाना ।

## परिणाम–

शिक्षार्थियों में तर्कशक्ति विश्लेषण एवं संश्लेषण क्षमता का विकास।

| व्यावसायिक पाठ्यकम –2 | भारतीय ज्ञान परंपरा और वैज्ञानिक चिंतन | |
|---|---|---|
| | | |
| पाठ्यकम कोड | | |

| | | |
|---|---|---|
| केडिट–03 | | |
| कुल अंक–25+75=100 | | |
| व्याख्यान, ट्यूटोरियल एवं प्रयोगों की कुल संख्या =3::0:0 | | व्याख्यानों की संख्या |
| इकाई–01 | वैदिक गणित, गणित एवं खगोल विज्ञान( आर्यभट्ट, महावीराचार्य, बोधायन, भास्कराचार्य, वराहमिहिर और ब्रह्मगुप्त ) | 10 |
| इकाई–02 | भौतिक विज्ञान,वनस्पति विज्ञान, जन्तु विज्ञान,रसायन विज्ञान एवं धातुकर्म | 10 |
| इकाई–03 | कृषि अथवा शस्य विज्ञान, वस्त्र विज्ञान, मौसम एवं पर्यावरण विज्ञान | 15 |
| इकाई–04 | चिकित्सा और आरोग्य विज्ञान | 10 |

संदर्भ ग्रंथ–1– वैदिक ज्ञान विज्ञान कोश आधुनिक परिप्रेक्ष्य में – संपादक डा0 मनोदत्त पाठक
2– प्राचीन भारतीय विज्ञान की पद्धति–प्रो0 वेकले–
3–भवन्स जर्नल– के एम0 मुंशी
3– भारतीय ज्ञान परम्परा में पर्यावरण एवं परिस्थितियां– प्रो0 मीरा द्विवेदी
4– प्राचीन भारतीय ग्रंथों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी– बलराम सिंह, नाथ गिरीश सिंह, उमेश
4– हिन्दी पत्रकारिता – कृष्ण बिहारी मिश्र
5. रचनात्मक लेखन–संपादकः रमेश गौतम
6.अर्थववेदीय चिकित्सा और औषधि विज्ञान– डा0 शालिनी शुक्ला, अक्षयवट प्रकाशन

## तृतीय सेमेस्टर– पारंपरिक प्रथाएं और व्यावहारिक पारंपरिक ज्ञान

### उद्देश्य–

पारंपरिक भारतीय व्यावहारिक ज्ञान एवं विविध कलाओं की आधारभूत संरचनाओं से शिक्षार्थियों को परिचित कराना

### परिणाम–

शिक्षार्थी विविध प्रकार के पारंपरिक भारतीय ज्ञान से परिचय पाकर उनका व्यावहारिक उपयोग सीखते हैं।

| व्यावसायिक पाठ्यकम –4 | पाठ्यकम का नाम– पारंपरिक प्रथाएं और व्यावहारिक पारंपरिक ज्ञान |
|---|---|
| | |

| | | |
|---|---|---|
| पाठ्यकम कोड | | |
| पाठ्यकम के उद्देश्य | | |
| केडिट–03 | | |
| कुल अंक–25+75=100 | | |
| व्याख्यान, ट्यूटोरियल एवं प्रयोगों की कुल संख्या =1::1:1 | | व्याख्यानों ट्यूटोरियल एवं प्रयोगों की संख्या |
| इकाई–01 | मिथक, अनुष्ठान, वर्जनाएं और विश्वास प्रणाली,लोक कथाएं ,गीत, खेल, पारंपरिक कथाएं, परंपराएं और प्रथाएं | 28 |
| इकाई–02 | कृषि, पशुपालन, वन , जल और मृदा संरक्षण और प्रबंधन की पद्धतियां | 2+4+4 |
| इकाई–03 | स्वदेशी जैव संसाधन संरक्षण, खाद्य संरक्षण की विधियां, हस्तशिल्प,लकड़ी प्रसंस्करण और नक्काशी , फाइबर निष्कर्षण ओर पोशाक | 2+4+4 |
| इकाई–04 | रंगाई, रंगों ,रंजकों और रसायनों का ज्ञान | 3+4+8 |

संदर्भ ग्रथ–


1–भारतीय मिथक कोश–उषा पुरी विद्यावाचस्पति–किताबघर–Booksinhindi.com

2-प्राचीन भारत में जल संरक्षण संस्कृति–sanskritimagazine.com

3-भारतीय कृषि का इतिहास, शाखाएं , महत्व और क्षेत्र–selfstudys.com

4- जैव विविधता संरक्षण एवं स्वदेशी ज्ञान प्रणाली– EPW{Economic and Political website}

5-भारत के हस्तशिल्प और वस्त्र–www.gradeup.com

6-प्राचीन भारतीय कला और संस्कृति–डा0 सत्यनारायण

7–कला और संस्कृति– वासुदेवशरण अग्रवाल, लोकभारती प्रकाशन


## चतुर्थ सेमेस्टर– भारतीय ज्ञान परम्परा का संरक्षण,परिरक्षण एवं प्रबंधन

**उद्देश्य–** भारतीय ज्ञान परम्परा का संरक्षण एवं प्रबंधन करना

**परिणाम–** विलुप्त होती संस्कृतियों और पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण होगा

| व्यावसायिक पाठ्यकम –4 | पाठ्यकम का नाम– भारतीय ज्ञान परम्परा का संरक्षण,परिरक्षण एवं प्रबंधन | |
|---|---|---|
| | | |
| पाठ्यकम कोड | | |
| पाठ्यकम के उद्देश्य | | |
| केडिट–03 | वैकल्पिक | |
| कुल अंक–25+75=100 | | |
| व्याख्यान, ट्यूटोरियल एवं प्रयोगों की कुल संख्या =1::1:1 | | व्याख्यानों ट्यूटोरियल एवं प्रयोगों की संख्या |

| | | |
|---|---|---|
| इकाई–01 | भारतीय ज्ञान प्रणाली का दस्तावेजीकरण एवं परिरक्षण | 2+4+4 |
| इकाई–02 | प्रकृति और जैव संसाधन के संरक्षण का दृष्टिकोण | 2+4+4 |
| इकाई–03 | मिथक, अनुष्ठान, वर्जनाएं और विश्वास प्रणाली,लोक कथाएं ,गीत, खेल, पारंपरिक कथाएं, परंपराएं और प्रथाओं और जनजातीय परम्पराओं के के संरक्षण की विधियां | 2+4+4 |
| इकाई–04 | भारतीय ज्ञान प्रणाली के संरक्षण की रणनीतियां | 3+4+8 |

संदर्भ ग्रंथ–1–भारतीय चिंतन परम्परा में प्रकृति संरक्षण–डा0 शिवशंकर मिश्र–श्री जयराम आश्रम ग्रंथमाला

2–जनजातीय संस्कृति और परंपरा का संरक्षणः और परम्परा का संरक्षणः एक मूल्यांकन–etribaltribune.com